Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह 'सलाम' में दलित समाज की अभिव्यक्ति

कमलेश राम
पीएचडी शोधार्थी, हिंदी विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Article History
Accepted : 25 March 2024
Published : 05 April 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 2
March-April-2024

Page Number : 21-28

शोधसार- ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी दलित साहित्य के प्रवर्तक हैं। वाल्मीकि की गहन मानवीय संवेदना एवं यथार्थपरक दृष्टि ने भारतीय समाज में शोषितों में भी अति शोषित, आर्थिक उत्पीड़न के साथ जातिगत उत्पीड़न से ग्रस्त दलित समाज की पीड़ी, छटपटाहट, वेदना, दरिद्रता आदि को अपनी कहानियों के माध्यम से समझने-समझाने का सफल प्रयास किया है। विषमतापूर्ण दलित जीवन तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु उसमें हो रहे सकारात्मक परिवर्तन को भी कहानियों में परिलक्षित किया है, भले ही बदलाव की यह सुगबुगाहट धीमी गति से हो रही है। इनकी कहानियों में दलित जीवन और दलित समाज का व्यापक फलक चित्रित है। दलित विचारक रविकुमार गोंड लिखते हैं, "ओमप्रकाश वाल्मीकि कवि, आलोचक और समीक्षक के साथ एक बेहतरीन कथाकर भी थे। उनके द्वारा रचित कथाएँ केवल कल्पना में नहीं जीतीं बल्कि उनकी कल्पनाएँ मानव जीवन की सच्ची तस्वीर पेश करती नज़र आती हैं। वह भोग हुआ यथार्थ लिखते थे और यथार्थवादी दृष्टिकोण उनकी रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है।"[1]

बीज शब्द- दलित, शोषण, संत्रास, भोग्य, यथार्थ, पीड़ा, त्रासद, अपमान, घुटन, चिंता, बेबसी, द्वन्द्व, मानसिक, शारीरिक, चूहड़ा, वाल्मीकि, वंचित, उपेक्षा, तिरस्कार, कपट, छल, घृणा, कुंठा, अंधविश्वास, रूढ़िवादी मानसिकता, अनाचार, प्रताड़ित, आर्थिक, दैहिक, आकस्मिक इत्यादि।

प्रस्तावना- ओमप्रकाश वाल्मीकि के कुल तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। पहला कहानी संग्रह 'सलाम' सन् 2000 ई0 में, दूसरा कहानी संग्रह 'घुसपैठिए' सन् 2003 ई0 में और तीसरा कहानी संग्रह 'छतरी' सन् 2013 ई0 में प्रकाशित हुआ। हम इन्हीं कहानी संग्रहों की कहानियों में अभिव्यक्त दलित समाज के अध्ययन का विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सलाम कहानी संग्रह वर्ष 2000 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसमें चौदह कहानियाँ संग्रहीत हैं–'सलाम', 'सपना', 'बैल की खाल', 'भय', 'कहाँ जाए सतीश', 'गोहत्या', 'ग्रहण', 'बिरम की बहू', 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', 'अंधड़', 'जिनावर', 'कुचक्र', 'अम्मा' और 'खानाबदोश'।

'सलाम' कहानी संग्रह की पहली कहानी है। इसी कहानी के आधार पर संग्रह का नामकरण भी किया गया है। यह वाल्मीकि जी की प्रतिनिधि कहानियों में से है। दलित चेतना की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। इस कहानी में एक ओर वर्ण व्यवस्था की ताकतवर दीवार सामंतवाद ध्वस्त होता है, दूसरी ओर दलित वर्ग के उस यथार्थ का चित्रण भी मिलता है जिसमें वह सदियों से जीता आया है। चेतना की दृष्टि से यह कहानी अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। इस कहानी में एक और वर्ण- व्यवस्था की ताकतवर दीवार सामंतवाद ध्वस्त होता है, वहीं दूसरी ओर दलित वर्ग के उस यथार्थ का चित्रण भी मिलता है जिसमें वह सदियों से जीता आया है।

विषमता ग्रस्त भारतीय समाज व्यवस्था को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने इस कहानी में हरीश और कमल उपाध्याय नामक दो पात्रों का सहारा लिया है। कमल उपाध्याय ब्राह्मण है और हरीश का अंतरंग मित्र है, हरीश जो कि एक दलित युवक है और वही कहानी का नायक है। प्रस्तुत कहानी में 'सलाम' नामक भारतीय समाज की जातिवादी कुप्रथा का जीवन चित्रण हुआ है। इस कुप्रथा के अंतर्गत दलितों को शादी के अवसर पर सवर्णों के दरवाजे पर सलाम करने जाना पड़ता है। सलाम करने पर सवर्ण वर्ग दलित को पूराने कपड़े और रही चीजें देता है। अपमानजनक इस परम्परा को दलित वर्ग सदियों से ढोता आया है। प्रस्तुत कहानी का नायक हरीश पढ़ा-लिखा है और अपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान के प्रति पूरी तरह जागृत है। वह कई प्रकार के दबावों के बावजूद अपनी शादी के अवसर पर सवर्णों के दरवाजे पर सलाम करने नहीं जाता। वह सत्ता के उस केन्द्र पर प्रहार करता है जिसे जाति-व्यवस्था ने परंपरा के नाम पर दलितों के खिलाफ निर्मित किया था । उसकी बातों में वर्चस्ववाद तहस-नहस होता दिखाई पड़ता है। वह कहता है- "आप चाहे जो समझे... मैं इस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ । यह 'सलाम' की रस्म बंद होनी चाहिए।"[2] क्रांतिकारी विचारों से संपन्न हरीश के चरित्र से यही प्रकट होता है कि अन्याय को न सहने तथा स्वाभिमान से जीने की चेतना ने दलितों में एक नयी ताकत को जन्म दिया है जिसके चलते वे स्वाभिमान की कीमत पर कोई समझौता करने को तैयार नहीं हैं। दलित चेतना को सशक्त रूप से प्रकट करने वाली 'सलाम' कहानी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर भारतीय समाज की जाति-व्यवस्था पर चोट करती है।

'सपना' कहानी में वाल्मीकि जी ने हिन्दू धर्म की खोखलियत, अमानवता, क्रियाकांड, भेदभावपरक नीति आदि का पर्दाफाश करते हुए दलित जागृति को चित्रित किया है । इस कहानी में गौतम नाम का दलित युवक मंदिर निर्माण के लिए न केवल पूरी निष्ठा और धार्मिक भावना से चन्दा एकत्र करता है, बल्कि जी-तोड़ परिश्रम भी करता है। गौतम का एस.सी. होना उन लोगों के लिए असहय हो जाता है । गौतम का मित्र ऋषिराज गौतम को हटाने का प्रयास करने वाले नटराजन ब्राह्मण से कहता है - "इससे क्या फर्क पड़ता है... (यदि गौतम एस.सी. है तो) नटराजन जी..... नटराजन उससे कहता है- "फर्क पड़ता है... पूजा-अनुष्ठानों में उन्हें आगे नहीं बैठाया जा सकता । यही रीत है। शस्त्रों की मान्यता है।"[3]

इस कहानी में वाल्मीकि जी ने एक और जाति-व्यवस्था से उत्पन्न सवर्णों के अमानवीय अत्याचारी को दिखाया है वहीं दूसरी ओर असहय स्थितियों के के हृदय में स्थित संवेदनशीलता को प्रकट किया है। अर्थाभाव के कारण काले और भूरे सवर्ण

की बछड़ी गाय के से अलग होकर भटकती हुई रास्ते पर आकर ट्रक ही के लिए बैल की खाल को शहर जाकर आज ही बेचना जरूरी होता है, किन्तु जब में से बावजूद टकरा जाती है तब वे दोनों अपनी सारी जरूरतों को भूलकर उस बछड़ी को बचाने का 'दलितो प्रयास करते हैं। बछड़ी को बचाने की कोशिश में देर हो जाती है और बैल की खाल उनके लिए व्यर्थ–सी हो जाती है, क्योंकि खाल से गंध आने लगी थी जिसके कारण उसे अब कोई खरीदेगा नहीं।

इस प्रकार यह कहानी एक ओर वर्ण–व्यवस्था की अमानवीयता प्रकट करती है वही दूसरी और दलितों के हृदय के प्रेम और करुणा के भावों को शब्दबद्ध करती है। 'भय' कहानी मनोवैज्ञानिक धरातल पर लिखी गई एक सशक्त कहानी है। इसमें नायक भय को दो स्तरों पर झेलता है। हीनताबोध और हिंसाबोध से उपजा भय नायक को अत्यंत करुणाजनक स्थिति में लाकर रख देता है। कहानी नायक दिनेश दलित है और अपनी जाति छिपाकर सवर्णों की कॉलोनी में रहता है। जाति छिपाकर वर्षों से इस कॉलोनी में रहते हुए रामप्रसाद तिवारी नामक ब्राह्मण के साथ उसका पारिवारिक संबंध और गहरी मित्रता हो जाती है। निम्न जाति के होने के कारण वह सवर्णों के जातिगत तिरस्कार और अपमान के दंश से बचना चाहता है। इसलिए वह सवर्णों के सामने अपनी जाति प्रकट नहीं होने देता। हिन्दू धर्म के अंधविश्वासों से ग्रस्त अपनी माँ के आग्रह के कारण न चाहते हुए भी वह गाँव जाकर सुअर के बच्चे की बलि चढ़ाकर उसका गोश्त लाने के लिए विवश हो जाता है । वह अपने ही हाथों से सुअर के बच्चे का वध करता है और माई मदारन की पूजा के लिए उसका गोश्त लाता है। घर का दरवाजा बंद करके उसकी माँ गोश्त के जरिए माई–मदारन की पूजा करती है। उस वक्त दिनेश के भीतर भय गहरा होने लगता है कि रामप्रसाद रोजाना की तरह आज भी उसके घर न आ जाये। पूजा के दौरान ही रामप्रसाद द्वार पर दस्तक देता है। रामप्रसाद घर में अजीब–सी गंध को महसूस करता है, दिनेश की माँ 'दिनेश घर में नहीं है' ऐसा झूठ बोल कर उसे पानी पिलाकर घर से विदा करती है। रामप्रसाद की बाते सुनकर दिनेश आशंका और भय से काँपने लगता है। वह रात में सो भी नहीं पाता। दो तरह का भय उसके भीतर और अधिक ठोस रूप धारण कर लेता है। पहला भय जातिगत हीनताबोध का था । उसे आशंका थी कि रामप्रसाद को उसकी जाति का पता चल गया है, इसलिए अब यहाँ रहना भी दूभर हो जायेगा और निम्न जाति के होने कारण सवर्ण उसका तिरस्कार भी करेंगे। दूसरा भय हिंसाबोध से उत्पन्न होता है। सुअर के बच्चे की हत्या स्वयं उसने अपने हाथों से की थी उसे मादा सुअर का विवशता भरा चेहरा याद आता है और सुअर के बच्चे की चिचियाने की आवाज उसके कानों में गूंजने लगती है। हीनताबोध और हिंसाबोध को केन्द्र में रखकर वाल्मीकि जी ने इस कहानी में मानवीय संवेदना की सूक्ष्म अभिव्यक्ति की है। मूलत: यह कहानी जाति– व्यवस्था और हिन्दू धर्म पर करारा व्यंग्य करती है । जाति–व्यवस्था की हीन प्रकृति के कारण ही दिनेश को अपनी जाति छिपानी पड़ती है और हिन्दू धर्म में व्याप्त पूजा के नाम पर पशु बलि के कारण ही उसे सुअर के बच्चे का विवश होकर वध करना पड़ा ।

'कहाँ जाए सतीश? कहानी सवर्णों की ब्राह्मणवादी मानसिकता पर प्रहार करते सवर्णों को अपने हीन आचरण पर सोचने के लिए मजबूर करती है। लेखक ने इस हुए कहानी में एक दलित युवक की विवशता भरी परिस्थितियों को कलात्मक ढंग से उभारा है । कहानी का नायक सतीश दलित युवक है और पढ़ाई करता है। उसके पिता उसकी पढ़ाई छुड़ाकर उसे परम्परागत पेशे में लगा देना चाहते हैं। सतीश परम्परागत पेशा नहीं करना चाहता । वह पढ़–लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करके सामाजिक स्तर पर सम्मान भरा जीवन व्यतीत करना चाहता है। दलित वर्ग हीनता बोध के साथ हजारों साल से जो

दु:ख भरा नर्कागार जीवन जीता आया है वह सतीश नहीं जीना चाहता है । अत: वह अपने घर से भाग जाता है । उसका शिक्षक रवि शर्मा उसे ब्राह्मण पंत परिवार में किराये पर एक कमरा दिला देता है। पंत परिवार में वह पारिवारिक सदस्य की भाँति रहने लगता है और पढ़ाई के साथ एक बल्ब फैक्टरी में काम करता है। इस प्रकार वह अपने जीवन को उन्नति की राह पर ले जाने का प्रयास करता है । हालांकि पंत परिवार जातिगत भेदभाव से बूरी तरह से ग्रस्त है। रवि शर्मा नामक उसका परिचित ब्राह्मण शिक्षक जब सतीश को वहाँ रखने आता है तो पंत परिवार सतीश को ब्राह्मण समझ लेता है। अत: सतीश की जाति छिपी रह जाती है किन्तु जब छ: महीने बाद उसके माता–पिता उसकी खोज करते हुए दलित मुलभ अपनी दयनीय दशा में वहाँ पर उपस्थित हो जाते हैं, तब उसकी जाति प्रकट हो जाती है। उस वक्त पंत परिवार में भरा हुआ जातिगत वैमनस्य का जहर पूरी तरह से बाहर ने लगता है। उस वक्त सतीश तो घर पर था नहीं । किन्तु पंत–परिवार को अब तक जो सतीश अपना महसूस हो रहा था वही सतीश उसकी जाति सामने आने पर अचानक शत्रु लगने लगता है। मिसेज पंत के व्यवहार में हिन्दू धर्म की अस्पृश्यता अपने घिनौने रूप में प्रकट होने लगती है । लेखक उसका वर्णन करते हैं– "आँगन में बंधे तार पर सतीश की पैंट–कमीज सूख रही थी। अंदर जाते समय मिसेज पंत कपड़ों से छू गई। मिसेज पंत के शरीर में बिजली–सी दौड़ गई। जैसे कोई गलीज चीज शरीर को छू गई हो। वह गुस्से में भीतर गई। बरामदे में रखे लंबे बॉस को उठाया और तार से पैंट–कमीज को नीचे गिरा दिया। बाँस से धकेलकर कपड़ों को आँगन के एक कोने में कूड़े–करकट की तरह फेंक दिया।"[4]

'गोहत्या' कहानी में हिन्दू धर्म की सदियों से चली आ रही क्रूर अमानवीय मान्यताओं का साफ चित्रण हुआ है और साथ में सवर्णों की षडयंत्रभरी न्याय व्यवस्था में स्थित दलित शोषण एवं अन्याय के पहलुओं का भी रेखांकन हुआ है। सुक्का नाम का दलित युवक कहानी का नायक है, जो एक समय गाँव के मुखिया बलदेव सिंह का बंधुआ मजदूर था । सुक्का का विवाह एक सुंदर युवती के साथ हो जाता है। गाँव में सुक्का की पत्नी के सौंदर्य की बातें फैलती हैं तो बलदेव सिंह उसके साथ सहवास करना चाहता हैं। इसलिए वह काम के बहाने उसे अपनी हवेली पर बुलाना चाहता है, किन्तु सुक्का अपनी पत्नी को हवेली पर भेजने से मना कर देता है और उसका काम भी छोड़ देता है। । अत: बलदेव सिंह सुक्का से बदला लेने की ताक में रहता है। उन दिनों बारूद पर पाँव पड़ने से उसकी गाय की मौत हो जाती है। आकस्मिक गाय की मौत को वह हत्या बनाकर सुक्का के सिर चढ़ा देने का प्रयास करता है। गाँव का पंच एकत्रित होता है। बलदेव सिंह ब्राह्मण रामचरण के साथ मिलकर षडयंत्र से सुक्का को गोहत्या के लिए जवाबदार बना देता है। हिन्दू धर्म की हीन मान्यता एवं ब्राह्मणवादी न्याय प्रणाली का परिचय देते हुए गाँव का सरपंच पंच का फैसला सुनाता है "हल में काम आने वाली लोहे की फाल को आग में तपाया जाएगा । जिसे दोनों हाथों में थामकर सुक्का 'गऊ माता, गऊ माता'... कहता हुआ, दस कदम चलेगा । यदि मुक्का ने गोहत्या नहीं की है तो गर्म लोहे की फाल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। ठीक वैसे ही जैसे अग्निपरीक्षा में सीता माता का कुछ नहीं बिगड़ा था। क्योंकि सीता माता पवित्र थी। ईमानदार थी। यदि सुक्का निर्दोष है, तो आग में तपा लोहा भी सुक्का को नहीं जला सकता । यह पंचों का फैसला है ।"[5]

'ग्रहण' और 'बिरम की बहू' दोनों कहानियाँ एक कथा–सूत्र से जुड़ी कहानियाँ हैं। दलित शोषण को व्यक्त करने वाली इन दोनों कहानियों का ताना–बाना सम आर्थिक जरूरियाली की पूर्ति पर बनने के साथ–साथ इनमें दो हृदयों की कोमल मान का कालात्मक ढंग से चित्रण हुआ है। दलित युवक रमेसर कहानियों का नया और बिरमपाल की पत्नी कहानियों की

नायिका है। रमेसर को पिताजी की बीमारी के कारण चढ़ाई छोड़कर घर की जिम्मेदारी सँभालनी पड़ी है। वह कड़ी मजदूरी करता है और उपा से सवर्णों की बेगार भी करता है। इस बेगार प्रथा के विरुद्ध उसके भीतर विद्रोह का उत्पन्न होता है किन्तु अर्थाभाव और विवशता के कारण वह कुछ कर नहीं पाता है। गाँव के सभी दलितों को बेगार करनी पड़ती है और बेगार के बदले में उन्हें प्रताड़ना, गाली और अपमान ही मिलते हैं। लेखक ने बिरम की बहू की स्थिति का वर्णन किया है, यथा "समय और समाज की सुद्ध दीवारों को तोड़ना उसके वश से बाहर था। वह जानती थी, यदि भेद खुल गया तो चौधरियों का अहम उसे हवेली से उठाकर कूड़ेदान में फेंक देगा या हवेली के किसी अंधेरे हिस्से में सदा–सदा के लिए दफन कर देगा । अपने लिए वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकती थी । पर रमेसर तो निर्दोष था। चौधरियों के कहर का परिणाम वह क्यों भुगते । सिर्फ वही नहीं पूरी भंगी–बस्ती को इसकी सजा दी जा सकती थी।"[6]

'पच्चीस चौका डेढ़ सौ कहानी दलित शोषण को उद्घाटित करने के साथ–साथ शिक्षा के महत्त्व को स्थापित करती है। बेगार करवाके सवर्ण समाज सदियों से दलितों का शोषण करता आया है। वाल्मीकि जी की कई कहानियों में इसका चित्रण भी मिलता हैं, किन्तु यह कहानी बताती है कि अशिक्षित होने के कारण भी सवर्ण समाज दलितों को बेवकूफ बनाकर उनका शोषण करता है। कहानी नायक सुदीप के जन्म से पहले उसके पिता बीमार पत्नी के इलाज के लिए गाँव के चौधरी से सौ रुपया कर्ज पर लेते हैं। चार महिने के बाद वे चौधरी को हिसाब देने जाते हैं। चौधरी सौ रुपए पर महिने का ब्याज पच्चीस रुपया लेता था। चार महिने का हिसाब करते हुए वह सुदीप के पिता से पच्चीस चौका डेढ़ सौ बताता है और चार महिने का ब्याज सौ की जगह डेढ सौ लगाता है। सुदीप के पिता को गिनती तो आती नहीं थी और चौधरी पर उन्हें पूरा विश्वास था । अत: वे उसके हिसाब का स्वीकार कर लेते हैं। सुदीप अपनी पढ़ाई के दौरान पच्चीस का पहाड़ा बोलते वक्त 'पच्चीस चौका सौ बोलता है तो वे उसे रोकते हैं और 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' बताते हैं । सुदीप के पिता को चौधरी पर इतना विश्वास था कि वे चौधरी के सामने किताब और शिक्षक को झूठे मानते थे । सुदीप बड़ा होकर पढ़–लिखकर नौकरी लेता है और अपनी पहली तनखा लेकर घर आता है। वह पच्चीस–पच्चीस रुपए की चार देरियाँ लगाता है और उसके पिता को पच्चीस चौका सौ की गिनती समझाता है। तब उनकी समझ में आता है कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ नहीं, सौ होते हैं। चौधरी पर जमा उनका विश्वास टूटता है और उनके मुँह से निकलता है, "कीड़े पड़ेंगे चौधरी... कोई पानी देने वाला भी नहीं बचेगा।"7 लेखक ने इस कहानी में सामंतवादी दलित शोषण का एक चित्र उभारा है और साथ–साथ यह भी बताया है कि आज का जागृत शिक्षित दलित वर्ग सवर्णों के ऐसे शोषण को अब आगे नहीं बढ़ने देगा ।

'अंधड़ कहानी जाति–व्यवस्था के उस खिलवाड़ को शब्दबद्ध करती है, जो दलित के जीवन में हीनताबोध को उड़ेलता है। इस कहानी के केन्द्र में पढ़ा–लिखा एक विशेष दलित वर्ग तथा सुसंस्कृत जातिवादी सवर्ण मानसिकता रही है । लेखक ने बताना चाहा है कि सवर्णों की जातिगत दुर्भावना एवं उनके द्वारा हो रहे अपमान के कारण ही बहुत से दलित अपमान भरी जिंदगी से बचने तथा सम्मानपूर्वक जीने की चाह में सवर्णों के बीच अपनी जाति छिपाकर रहते हैं । जातीय श्रेष्ठता के दंभ में जीने वाले सवर्णों के द्वारा कदम–कदम पर दिये जाने वाले जातिगत निम्नता के दंशों को सहना दलितों के लिए असह्य हो जाता है । अत: कई दलित अपनी जाति छिपाकर रहते हैं। कहानी का नायक मि. लाल एक दलित परिवार में पला–बड़ा है । अत्यंत दयनीय अवस्था में उसके परिवार एवं रिश्तेदारों ने उसे पढ़ाया है। पढ़ाई के बाद उसे सरकारी दफ्तर में उच्च पद पर नौकरी

मिल जाती है । पढ़ी-लिखी लड़की सविता से उसका विवाह हो जाता है। इसके बाद वह परंपरागत ढंग से जीनेवाले अपने परिवार और रिश्तेदारों से नाता तोड़ देता है, क्योंकि उन लोगों के आने-जाने से उसकी जाति प्रकट हो जाती और सवर्ण समाज उसके साथ जातिगत तिरस्कार भरा व्यवहार करना शुरू कर देता । जाति के जिन देशों को वह अब तक भुगतता आया था उन्हें वह अब नहीं भुगतना चाहता था। मि. लाल के इस व्यवहार के संदर्भ में कहानी कहती है कि "नाते रिश्तेदारों से कन्नी काटने - का निर्णय उन्होंने अचानक नहीं लिया था, बल्कि स्कूल, कॉलेज और फिर नौकरी तक आते-आते उन्होंने जो कुछ भी भोगा, महसूस किया, उसी का परिणाम था ये सब । कदम-कदम पर जाति का अहसास उन्हें हीनताबोध से भर देता था। ऐसे क्षणों में उनका आत्म-विश्वास डगमगा जाता था। "[8] वस्तुत: लेखक ने बताया है कि जाति- व्यवस्था ने अपनी अमानवीय प्रकृति के कारण न केवल दलितों को अन्य वर्ग से तोड़ा हैं, बल्कि दलितों को दलितों से भी अलग किया है। पढ़ा-लिखा दलित वर्ग का एक हिस्सा जातिगत हीनता बोध से बचने के लिए अपनों से भी अलग हो जाता है। हालांकि इस कहानी का नायक अंत में अपनों से फिर से संबंध स्थापित कर लेता है, उसके भीतर सोयी संवेदना जाग उठती है।

'जिनावर' कहानी में लेखक ने ब्राह्मणवाद एवं सामंतवाद के अहम् को तोड़कर दलित वर्ग में स्थित मानवता को उजागर किया है। इस कहानी में संपन्न एवं समर्थ सवर्ण चौधरी की पशुता के आगे जगेसर नामक दलित युवक की मानवीयता का चित्रण हुआ है। कहानी की शुरुआत दलित युवक जगेसर और चौधरी के बेटे बिरजू की पत्नी की यात्रा के प्रारंभ से होती है। चौधरी के कहने पर जगेसर बिरजू की पत्नी को उसके मायके छोड़ने उसे साथ लेकर चल पड़ता है । जगेसर जोकि चौधरी का बंधुआ नौकर है, चौधरी जो भी कहता है वह जगेसर बिना सोचे-समझे कर देता है बदले में उसे रहने के लिए एक छोटी-सी जगह और खाने के लिए थोड़ा-सा अन्न मिल जाता है। यात्रा के प्रारंभ से ही जगेसर को बिरजू की पत्नी के चेहरे पर गहरी उदासी और दु:ख की छाया दिखाई पड़ती है । जगेसर उसके साथ बातचीत करके उसके दु:ख और उदासी का कारण जानना चाहता है पर वह कुछ बोलती ही नहीं है । वह बिलकुल धीरे-धीरे चलती है । जगेसर के बार-बार कहने पर भी वह उसके साथ नहीं चल पाती। अंतत: जंगल की राह से गुजरते वक्त वह अपनी उदासी का कारण जगेसर के सामने प्रकट करती है। चौधरी बिरजू की पत्नी को घर से निकाल कर उसके मायके इसलिए भेजता है कि उसने उसकी हवस का शिकार बनने से लगातार इनकार किया था । जगेसर विश्वास नहीं कर पाता कि जो कुछ कह रही है वह हकीकत में सच है । बहु उसे विश्वास दिलाने के लिए बहू चौधरी ने जिस दलित लड़की किसनी का तीन महिने तक यौन शोषण किया और अंत में उसे मारकर फेंक दिया था इस बात का रहस्योद्घाटन करती है।

'कुचक्र' कहानी दलित के विरुद्ध सवर्णों के षडयंत्र की कहानी है। शिक्षित और सभ्य कहलाने वाले ब्राह्मणवादी मानसिकता के धनी सवर्णों की जातिवादी दृष्टि इस कहानी में अपने पूर्ण घिनौने रूप में प्रकट हुई है। बाहर से सभ्य और शिष्ट दिखने वाला सुसंस्कृत सवर्ण वर्ग भीतर से कितना खोखला, असभ्य एवं भेदभाव से ग्रस्त रहा है. इसकी यह कहानी बेबाक अभिव्यक्ति है । कहानी का नायक एक दलित व्यक्ति आर.बी. है, जो एक दफ्तर में नौकरी करता है। आर.बी. एक स्वाभिमानी एवं इन्सानियत का धनी व्यक्ति है । दफ्तर में उसकी कार्यकुशलता, परिश्रम एवं कर्तव्यनिष्ठता के कारण उसे प्रमोशन मिलना तय हो जाता है। आर.बी. को प्रमोशन मिलने वाला है यह समाचार सुनते ही दफ्तर के सवर्ण अधिकारियों में जातिगत द्वेष भाव: अधिक तीव्र हो जाता है। निशिकांत और बी. के. नामक दोनों सवर्ण मिलकर आर.बी. के. प्रमोशन को रुकवाना के लिए

कई प्रकार के प्रपंच रचते हैं। उसे एक सेक्शन से हटाकर दूसरे सेक्शन में डाल दिया जाता है, उसकी वार्षिक गोपनीय रपट को खराब कर दी जाती हैं, जिस सेक्शन का पदभार वह सँभाले हुए है उसमें चोरी हो जाती है तो उसे बताया तक नहीं जाता । इन सबके बावजूद आर. बी. सवर्णों के सामने झूकता नहीं है। वह वी. के. को साफ-साफ सुना देता है, "मि. वी. के. आप साबित कर सकते हैं कि मुझमें तकनीकी योग्यता की कमी है। मेरी विश्वसनीयता संदिग्ध है। मैं किसी कार्य में पहल नहीं करता ।... आप सिद्ध नहीं कर सकते... और यदि आप सोचते हैं कि मुझे प्रमोशन मिलने वाली है उसे रुकवाकर आपको और आपके चमचों को कुछ राहत मिलेगी तो आप गलत साबित होंगे । आपने मेरी मानसिक शांति भंग की है। आप शांत नहीं रह पाएँगे।"[9] अत: दफ्तर के दाव पेचों में सवर्णों को सफलता नहीं मिलती।

'अम्मा' कहानी दलित वर्ग की पुरानी पीढ़ी में विकसित हुई नई सोच की कहानी है, जो अपमान एवं तिरस्कार भरे जीवन से उबरने के लिए परंपरागत व्यवसाय को छोड़कर शिक्षा एवं आदरपूर्ण व्यवसाय को स्वीकारने की प्रेरणा देती है । जाति-व्यवस्था से प्राप्त साफ-सफाई का कार्य दलित वर्ग सदियों से अब तक करता आया है। परिणाम- स्वरूप उसका जीवन छुआछूत, अस्पृश्यता एवं जातिभेद का अमानवीय ढंग से शिकार होता रहा। वर्तमान का जागृत दलित वर्ग अपने बच्चों को पढ़-लिखकर नये व्यवसाय स्वीकारने की प्रेरणा देता है। कहानी की नायिका अम्मा स्वयं विवाह के बाद साफ-सफाई का काम करती है और अपमान तथा तिरस्कार भरे जीवन के दंश को बराबर महसूस करती है । इसलिए वह स्वयं जिंदगी भर सवर्णों के नरक की सफाई करती है, किन्तु अपनी संतानों को उस नरक की परछाइयों तक से दूर रखती है । उसके बच्चे सम्मानपूर्वक जी सके इस हेतु वह उन्हें पढ़ाती है। वह एक स्वाभिमानी स्त्री होने के कारण वृद्धावस्था में भी झाड़ू लेकर साफ-सफाई करने चली जाती है, ताकि वह अपनी संतानों पर बोझ न बने । अम्मा का अब इस प्रकार काम करना उसके बेटों को अच्छा नहीं लगाता, लोग देखते हैं तो उन्हें शर्म आती है। इस स्थिति में वह अपने बेटे बिसन से कहती है- "बेट्टे बिसन... तैन्ने और तेरे जातकों (बच्चों) ने सरम आवे...इसीलिए तो पढ़ाया-लिखाया। थारे सबके हाथ से झाड़ू-टोकरा छुड़ाया... मेरे बाद इस घर की कोई बहू- बेट्टी ठिकानों में नहीं गई...सिर्फ इसलिए कि तुम सब लोग इज्जत से जीना सिक्खो।"[10] इस प्रकार लेखक ने अम्मा के चरित्र के माध्यम से परंपरागत नारकीय जीवन से मुक्त होकर शिक्षा प्राप्त करके स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दलित वर्ग को दिया है। अम्मा के जीवन की नर्कागार वास्तविकता को प्रकट करते हुए लेखक ने भारतीय समाज-व्यवस्था की सड़न की ओर भी संकेत किया है ।

'खानाबदोश' कहानी दलित उत्पीड़न, संघर्ष और यौन शोषण को यथार्थ की भूमि पर प्रकट करती है। कहानी नायक सुकिया और कहानी नायिका मानों दोनों दलित पति- पत्नी है। संपूर्ण कहानी में सुकिया और मानो अभावग्रस्त जीवन के साथ संघर्ष करते नजर आते हैं। ऐसे में उन्हें सवर्ण की यौन शोषणवृत्ति से जूझना पड़ता है। विवाह के बाद सुकिया अपनी पत्नी मानों को लेकर अपमान और तिरस्कार भरी गाँव की नकगार जिंदगी को छोड़कर निकल पड़ता है। वह एक जगह ईंट के भट्टे पर काम पर लग जाता है। उसके साथ उसकी पत्नी मानो भी काम करने लगती है। पक्की ईंटों को देखकर मानो के मन में अपना एक मकान बनाने का खयाल आता है। अत: वह पैसा एकत्र करके अपना मकान बनाने का स्वप्न देखने लगती है। सुकिया और वह दोनों जी-तोड़ मेहनत में लग जाते हैं । इसी बीच भट्टे पर एक नई परिस्थिति उत्पन्न होती है। भट्टे का मालिक मुखतार सिंह का बेटा सूबेसिंह मुखतार सिंह की जगह प्रतिदिन भट्टे पर आने लगता है। किसनी नामक एक दलित

स्त्री को वह अपने दफ्तर में काम देकर उसका यौन शोषण करना शुरू कर देता है। किसनी बीमार पड़ती है तब उसकी नजर मानो पर पड़ती है, किन्तु मानो दफ्तर में जाने से मना कर देती है। मानों के इन्कार पर दलित उत्पीड़न तेज हो जाता है। सुकिया को ईंट पाथने की जगह से हटाकर मोरी के खतरनाक काम पर लगाया जाता है । उनकी बनाई हुई सारी कच्ची ईटों को तोड़ दिया जाता है । आर्थिक अवदशा से जूझते सुकिया और मानो पर दु:ख का पहाड़ टूट पड़ता है। अंतत: संभावित जोखिमों को देखते हुए उन्हें वहाँ से अनिश्चित भविष्य की आगे की यात्रा के लिए निकल जाना पड़ता है। उस वक्त की मानो की मन:स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है, "सपनों के काँच उसकी आँख में किरकिरा रहे थे। वह–भारी मन से सुकिया के पीछे–पीछे चल पड़ी थी, अगले पड़ाव की तलाश में, एक दिशाहीन यात्रा पर।"[11] ईंटों से बने मकान में रहने का मानो का सपना, सपना ही बनकर रह जाता है।

निष्कर्ष: इस प्रकार यह कहानी सवर्णों की उत्पीड़न–वृत्ति एवं यौन– शोषणवृत्ति को प्रकट करते हुए दलितों की संघर्ष गाथा को उजागर करती है । कहानी का अंत भटकता जीवन जीने के लिए विवश दलित लोगों के जीवन यथार्थ पर सोचने के लिए मजबूर कर देता है। समग्र रूप से यह कहानी दलितों की दयनीय अवस्था के लिए जाति–व्यवस्था को ही ज़िम्मेदार बनाती है ।

संदर्भ

1. रविकुमार गोंड, ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्यिक चिंतन, शब्दयोग, संपादक सुभाष पंत, 2014, पृ. 96
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि, सलाम, सलाम (कहानी संग्रह), पृ. 17
3. वही, पृ. 29,
4. वही, पृ. 50
5. वही, पृ. 62
6. वह, पृ. 69
7. वही, पृ. 73
8. वही, पृ.110
9. वही, पृ. 111
10. वही, पृ. 122
11. वही, पृ. 132